शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

सम्पादकीय

पीढ़ियों के द्वंद्व में उलझी देश की राजनीति

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

आज देश की कमोबेश सभी राजनीतिक पार्टियों में पीढ़ियों का द्वंद्व दिखायी दे रहा है। इसका मुख्य कारण मरते दम तक समाप्त न होने वाली सत्ताकांक्षा की जीजीविषा है। एक ओर तो हम भारतीय संस्कृति के त्यागी-तपस्वी होने का गुणगान करते नहीं थकते और दूसरी ओर अपने में अनंत भोगों की लालसा को पूर्ण करने के लिए किसी भी उम्र में किसी भी हद तक जाने को सदैव तैयार बैठे रहते हैं। हमारे पुराणों में ऐसी ढेरों कहानियां मौजूद हैं, जिसमें राजा अपने सिर पर एक सफेद बाल दिखाई दे जाने पर अगले ही दिन राज-पाट त्याग जंगल की ओर प्रस्थान करने का निर्णय ले लेता था। लेकिन यहां तो एक बाल क्या, पूरे बालों के सफेद हो जाने के बाद भी कुर्सी का मोह नहीं जा रहा है। आज हर कोई अपने आप को दूसरों के मुकाबले में युवा बताकर अपना उल्लू सीधा करना चाह रहा है। जो ऐसा कर रहे हैं, वे भी वृद्धावस्था की दहलीज से बस कुछ ही कदम की दूरी पर हैं। साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'रागदरबारी' में भारतीय राजनीति में वृद्धों की भूमिका पर व्यंग्य करते हुए लिखा है, ''बुढ़ापा वैद्यजी के लिए इस शब्द का इस्तेमाल सिर्फ अरथमेटिक की मजबूरी के कारण करना पड़ा, क्योंकि गिनती में उनकी उमर बासठ साल हो गयी थी पर राजधानियों में रहकर देशसेवा करने वाले सैकड़ों महापुरुषों की तरह वे भी उमर के बावजूद बूढ़े नहीं हुए थे और उन्हीं महापुरुषों की तरह वैद्यजी की यह प्रतिज्ञा थी कि हम बूढ़े तभी होंगे जबकि मर जाएंगे और जब तक लोग हमें यकीन न दिला देंगे कि तुम मर गये हो, तब तक अपने को जीवित ही समझेंगे और देश सेवा करते रहेंगे।''

जब भारतीय राजनीति के नेतृत्व पर नजर जाती है, तो यही चित्र उभर कर सामने आता है। दूसरी ओर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबंध 'शिरीष के फूल' में लिखते हैं, ''शिरीष के फूलों को देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी जगह नहीं छोड़ते। जब तक नए फूल-पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़-खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते, तब तक जमे रहते हैं। मैं सोचता हूं कि पुराने की यह अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ?''

इन दो उदाहरणों से भारतीय राजनीति में युवा और वृद्धों के बीच सतत चलने वाले द्वंद्व की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। आज ऐसे अनेक बुजुर्ग नेता हैं, जिन्हें युवा पीढ़ी धक्का मारकर बाहर का रास्ता दिखाना चाहती है, परंतु वृद्ध हैं कि अपनी जिद पर अड़े हुए हैं। एक समय कांग्रेस के अध्यक्ष सीताराम केसरी हुआ करते थे। जब उनके नेतृत्व में कांग्रेस की नैया डूबने-बिखरने लगी, तब सोनिया गांधी ने अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए केसरी जी को बाहर का रास्ता दिखाया था। अब भारतीय जनता पार्टी इसी द्वंद्व से गुजर रही है। इसके वृद्ध जमाने का रुख नहीं पहचान रहे हैं। वे अब भी अपने आपको सत्ता के उच्च शिखर की दौड़ में बनाए रखना चाहते हैं। ये वही हैं जो भारतीय संस्कृति की आश्रम व्यवस्था की दुहाई देते नहीं थकते, जिसमें ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम की बात कही गई है। यहीं पर कथनी-करनी का अंतर भी उजागर हो जाता है।

युवा और बुजुर्गों के द्वंद्व पर निबंधकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने अपने निबंध 'क्या लिखूं' में लिखा है, "जो वृद्ध हो गए हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।" इस द्वंद्व से बचने के लिए ही भारतीय अध्यात्म में 'क्षेत्र संन्यास' की बात कही गई है। साम्यवादी देश चीन ने राजनीति में अनिवार्य सेवानिवृत्ति के सिद्धांत को अपनाया। तभी तो एक समय उसने अपने यहां के 75 वर्ष से उपर की आयु के 35 साम्यवादी नेताओं को एक साथ सेवानिवृत्त कर दिया और युवाओं के हाथ में देश की कमान सौंप दी। आज का युवा अपने पिता के कंधे पर बैठा है। उसे अपने पिता से ज्यादा दिखाई दे रहा है। वृद्धजन यदि अपनी भूमिका का निर्धारण शीघ्र नहीं करेंगे तो युवाओं के जोश का सामना वे अधिक दिनों तक कर पाएंगे, इसमें संदेह है। इसके पहले कि शिरीष के फूल के समान फलों को धक्का देकर बाहर किया जाए, वे ससम्मान झड़ जाएं इसीमें भलाई है।

लोकसभा चुनाव में दलबदल का दौर चरम पर है। एक बार आचार्य कृपलानी के पास कांग्रेस के कुछ नाराज नेता टिकट मांगने पहुंचे। नेताओं ने कृपलानी जी से कहा कि यदि पंडित नेहरू उन्हें टिकट नहीं देते हैं तो वे सब आपकी पार्टी से चुनाव लड़ने को तैयार हैं। कृपलानी जी ने उन्हें नेताओं के सामने पंडित नेहरू को तुरंत टेलीफोन किया और नेताओं के नाम गिनाते हुए कहा कि मेरे सामने आपकी पार्टी के कुछ नेता टिकट मांगने आए हैं। इन नेताओं को मैं तो टिकट नहीं दे रहा हूं आप भी इन्हें टिकट मत दीजिए। इनके लिए टिकट ज्यादा प्रमुख है देश काफी पीछे है। आज सत्ताकांक्षी किसी भी राजनीतिक दल में ऐसी हिम्मत नहीं है।